0752CH17

मौत का पहाड़
शब्द : गायत्री मदन दत्त
चित्र : राम वाईरकर
इचिरो और चिरो दो भाई थे. दिन-भर वे अपने खेतों में काम करते थे.
शाम को जब वे घर लौटते, उनकी मां सुमी मुस्कराते हुए उनका स्वागत करती थी.
आओ, मेरे बेटो, भोजन तैयार है.
पर कुछ दिनों से इचिरो और चिरो उदास रहने लगे थे...
...और वे अक्सर खिड़की में से, दूर, कुहरे से घिरे पहाड़ की ओर देखा करते थे.
70 वर्ष के होते ही सब बूढ़ों को उनके बेटे इसी पहाड़ पर ला कर छोड़ जाया करते थे.
यह नियम उस राज्य के राजा ने बनाया था. इसके पीछे विचार यह था कि जब बूढ़ों में योग्यता और ताकत खतम हो जाती हैं, वे परिवार और समाज पर बोझ बन जाते हैं.
इस नियम में यह बात भुला दी गयी थी कि बूढ़े लोग अपना वर्षों का अनुभव और ज्ञान अपने बच्चों को दे सकते हैं.
और एक शाम, सुमी ने अपने बेटों से कहा –
मेरे बच्चो, आज पूर्णमासी है. आज मैं 70 वर्ष की हो गयी. अब इस राज्य के नियम के अनुसार...
...कल तुम मुझे उस पहाड़ पर पहुंचा आओ, जहां से कोई लौट कर नहीं आता.

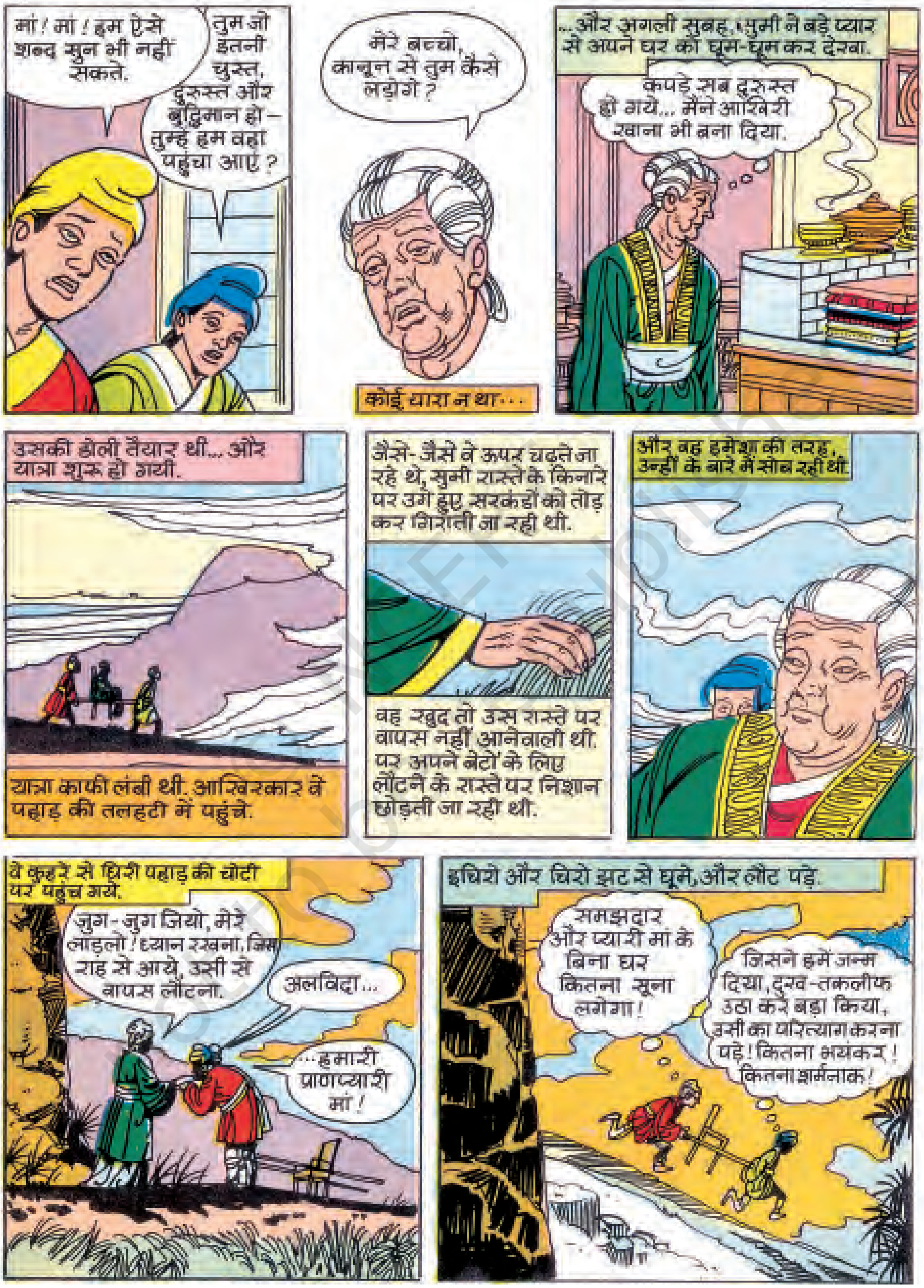
मां! मां! हम ऐसे शब्द सुन भी नहीं सकते.
तुम जो इतनी चुस्त, दुरुस्त और बुद्धिमान हो– तुम्हें हम वहां पहुंचा आएं?
मेरे बच्चो, कानून से तुम कैसे लड़ोगे?
कोई चारा न था...
...और अगली सुबह, सुमी ने बड़े प्यार से अपने घर को घूम-घूम कर देखा.
कपड़े सब दुरुस्त हो गये... मैंने आखिरी खाना भी बना दिया.
उसकी डोली तैयार थी... और यात्रा शुरू हो गयी.
यात्रा काफी लंबी थी. आखिरकार वे पहाड़ की तलहटी में पहुंचे.
जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते जा रहे थे, सुमी रास्ते के किनारे पर उगे हुए सरकंडों को तोड़ कर गिराती जा रही थी.
वह खुद तो उस रास्ते पर वापस नहीं आनेवाली थी. पर अपने बेटों के लिए लौटने के रास्ते पर निशान छोड़ती जा रही थी.
और वह हमेशा की तरह, उन्हीं के बारे में सोच रही थी.
वे कुहरे से घिरी पहाड़ की चोटी पर पहुंच गये.
जुग-जुग जियो, मेरे लाड़लो! ध्यान रखना, जिस राह से आये, उसी से वापस लौटना.
अलविदा...
...हमारी प्राणप्यारी मां!
इचिरो और जिरो झट से घूमे, और लौट पड़े.
समझदार और प्यारी मां के बिना घर कितना सूना लगेगा!
जिसने हमें जन्म दिया, दुख-तकलीफ उठा कर बड़ा किया, उसी का परित्याग करना पड़े! कितना भयंकर! कितना शर्मनाक!

अंधेरा हो चला था और बर्फ भी गिरने लगी थी. उतावली में, भाइयों ने छोटे रास्ते से नीचे उतरने का फैसला किया.
अचानक, बर्फ के फाहे घने होने लगे और जोरदार तूफान शुरू हो गया.
अब कैसे जाएं ? हम कहां हैं ?
इचिरो, हम रास्ता भटक गये हैं ! आगे कोई रास्ता नहीं है.
और निराश हो कर वे वापस पहाड़ की चोटी की ओर दौड़ पड़े.
मां, तुम कहां हो ?
हम रास्ता भटक गये हैं, कहां हो ?
बर्फ से सुन्न हो कर, अधमरी-सी सुमी झाड़ियों के पीछे पड़ी थी. पर उसमें चेतना आयी...
...बच्चों को मेरी जरूरत है
इचिरो और चिरो ने उसे डोली में बैठाया और घर ले चले
वे देखो, टूटे हुए सरकंडे पड़े हैं न ? उसी रास्ते चलो, मेरे बच्चो.
बड़ी आसानी से और आत्म-विश्वास के साथ सुमी उन्हें पहाड़ से नीचे ले आयी...
...और उनका घर आ गया.
हम तुम्हें कभी नहीं जाने देंगे, मां !
चाहे हमें कुछ भी क्यों न सहना पड़े
इचिरो और चिरो ने सुमी को झोपड़ी के पिछले हिस्से में छिपा दिया, ताकि गांववालों और सिपाहियों को उसका पता न चले.
वे तीनों बड़े आनंद से रहने लगे.

एक दिन, उस राज्य के राजा ने सभी परिवारों के पुरुषों को बुलवाया.
मैं कुछ काम बताऊंगा, जो कि तुम सबको करने होंगे. जो लोग असफल रहेंगे, उनपर भारी जुर्माना होगा.
पहला काम यह है कि राख की रस्सी बना कर लाओ.
रस्सी...?
...सो भी राख की?
इचिरो और चिरो ने इस अनोखे काम के बारे में सुमी को बताया.
अरे, बड़ा आसान है! एक रस्सी लो, उसपर खूब नमक का पानी मलो. फिर उसे एक पतरे पर रखो और आग लगा दो.
रस्सी जलने पर राख रह जायेगी. पर नमक की वजह से वह बिखरेगी नहीं.
अगले दिन, दरबार में—
काम पूरा कर लाये! अति उत्तम! तुम्हारे नाम क्या हैं?
इचिरो और चिरो, महाराज.
बहुत खूब...! और याद है न, जो लोग यह काम नहीं कर पाये, उन्हें जुर्माना भरना होगा.
और बाकी सब गांववालों ने जुर्माना भर दिया.
अब दूसरा काम एक शंख लाओ, जिसके आरपार धागा पिरोया हुआ हो.

सुमी के पास इस समस्या का भी हल था. बोली – पहला कदम है एक चींटी को पकड़ना...
...उसके पैर में धागा बांध कर उसे शंख के ऊपरवाले छेद में से अंदर जाने दो.
फिर शंख के मुंह पर कुछ चावल के दाने रखो.
चावल के दानों से आकर्षित हो कर चींटी शंख में से अपना रास्ता बना कर निकलेगी तो धागा भी शंख के मुंह तक पहुंच जायेगा.
और राजा की खुशी की सीमा न रही!
दूसरे गांववालों को दुबारा जुर्माना भरना पड़ा.
तीसरा काम था, बांस के टुकड़े में जड़ और तने की ओर के सिरों को पहचानना. सुमी के उत्तर को दरबार में प्रयोग करके दिखाया गया.
बांस के टुकड़े को पानी में डालिए. जो सिरा तैरे वह तने की ओर का है, और जो डूबे, वह जड़ की ओर का.
लाजवाब ! मेरे बच्चो, इस बार भी तुमने काम कर दिखाया.
एक ऐसा ढोल लाओ, जो बिना बजाए बजता हो.
राजा का बताया यह काम भी बच्चों ने घर जा कर सुमी को बताया. कुछ देर सोचने के बाद सुमी हंसने लगी.
अचार के इस डिब्बे का ढक्कन और पेंदा हटाने से वह दोनों ओर से खुल जायेगा.

अब चमड़े के गोल टुकड़े काट कर इसके दोनों ओर मढ़ दो मगर उससे पहले...
...कुछ मधुमक्खियां अंदर छोड़ दो.
जब राजा जी ने उत्सुकता से उस अनोखे ढोल को हाथ में उठाया, तो अंदरवाली मधुमक्खियां घबरा कर उड़ीं और चमड़े से टकराने लगीं, जिससे...
ढुप्प
ढुप्प
ढुप्प
...ढोल अपने आप बजने लगा.
चमत्कार! चमत्कार! मेरे बताये सभी काम पूरे करने के उपलक्ष्य में, ऐ लड़कों, मैं तुम्हें उगते हुए सूर्य का पदक प्रदान करता हूं.
महाराज, रुकिए हम एक अपराध स्वीकार करना चाहते हैं.
इस सम्मान के हकदार हम नहीं, बल्कि हमारी मां हैं, जिन्हें हमने अपनी झोपड़ी के पीछे छिपा रखा है.
हालांकि वे 70 वर्ष की हो चुकी हैं, पर हमने उन्हें नहीं जाने दिया है. इस तरह हमने राज्य का नियम तोड़ा है.
क्या! तुमने नियम तोड़ा है? तब तो तुम्हें वही दिया जायेगा, जिसके तुम लायक हो...

...तुम्हें क्षमादान दिया जाता है! हा हा हा!
इचिरो और चिरो, आज मुझे बहुत बड़ी सीख मिली है. मैं अपने बनाये उस निर्दय नियम को रद्द करता हूं.
महाराज, कृपा करके इन गांववालों के दिये हुए जुर्माने को वापस लौटा दीजिए. क्योंकि ये बेचारे तो गरीब से गरीबतर हो गये हैं.
मैं न सिर्फ इनके रुपये लौटाऊंगा, बल्कि एक कोष स्थापित करूंगा, जिसकी सहायता से ये अपने बूढ़े मां-बाप की अच्छी तरह से परवरिश कर सकें.
और जल्दी ही, दरबार में—
सूमी, तुम्हारी सूझबूझ और समझदारी के लिए और जो ममता तुमने अपने बच्चों को दी है, उसके लिए मैं तुम्हारा सम्मान करता हूं.
अब से तुम और तुम्हारे ये लड़के मेरे शाही सलाहकार होंगे.
और उस दिन से मौत का पहाड़ सूना पड़ा है...
...क्योंकि अब किसी अभागे बेटे को अपने प्यारे मां-बाप को वहां छोड़ने नहीं आना पड़ता.